Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५
६८ख

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या १५
पुस्तक संख्या ६८ ख
पञ्जिका संख्या २६,४३८

...र किसी प्रकार का निशान
... कृपया १५ दिन से अधिक
...पास न रखें।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९५
८८ख

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

17938

वर्ग संख्या......... ..   आगत संख्या............

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित हैं । इस तिथि सहित ३०वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए । अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण-बोध-माला । पुस्तक १

ॐ

शतपथ-बोधामृत ।

COMPILED

लेखक और प्रकाशक

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

स्वाध्याय-मंडल, औंध (जि. सातारा.)

द्वितीयवार १०००

विक्रम संवत् १९८४, ईसवी सन १९२८

मूल्य चार आने ।

17938

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् *

पुस्तक-संख्या ...९५/१६८ख

पंजिका-संख्या १६५३८

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकते। अधिक देर तक रखने के लिए पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

... मूल्य =) दो आने।

(३) वैदिक-पाठ-माला। प्रथम पुस्तक। तृतीय श्रेणीकी धर्मशिक्षा के लिये। मूल्य ≡) तीन आने।

अन्य श्रेणियों के लिये ग्रंथ तैयार हो रहे हैं। अपने अपने स्थानके पाठशालाओंमें इन्हींकी पढाई शुरू कीजिए और बालकोंके अंतःकरणोंमें वैदिक धर्मका वायु-मंडल बनाइए।

मंत्री—स्वाध्याय-मंडल,
औंध (जि. सातारा.)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

१५
८.८ ९
१६५३८
२१-५-५२

ब्राह्मण-बोध-माला ।

प्रथम-पुस्तक ।

शतपथ-बोधामृत ।

प्रथम भाग । (प्रथम कांड ।)

CHECKED 1973
Initial

लेखक और प्रकाशक ।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

स्वाध्याय-मंडल, औंध (जि. सातारा.)

द्वितीयवार १०००

विक्रम संवत् १९८४, शालिवाहन शक १८४९,

ईसवी सन १९२८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोध का आधार ।

बोधसे ही हम सब की उन्नति होनेवाली है । इस लिये जहांसे बोध प्राप्त हो सके, वहांसे प्राप्त करना चाहिए । आर्ष ग्रंथोंमें शतपथ ब्राह्मण अत्यंत प्राचीन ग्रंथ है । वैदिक वाङ्मयका विचार करनेवालोंको शतपथ पढनेकी आवश्यकता है । शतपथका पढना अत्यंत कठिन है । इस लिये उस ग्रंथको सब पढ नहीं सकते । इसी कारण उसका उपदेश सबके हृदयोंतक पहुंच नहीं सकता ।

इस कठिनता को दूर करनेके लिये शतपथके बोध वचनोंका संग्रह करनेका प्रयत्न इस पुस्तकमें किया है । शतपथमें सहस्रों बोध वचन हैं । सबका संग्रह करनेसे बडा ग्रंथ होगा । यदि इस प्रकारका ग्रंथ रचनेके लिये ग्राहकोंसे उत्साह मिला, तो विस्तृत ग्रंथ भी तैयार हो सकता है ।

इस प्रकारके वचनोंका मनन करनेसे शतपथके तत्त्वज्ञानका पता लग सकता है । आशा है कि वैदिक वाङ्मयके संशोधनमें पाठक भी सहायता करेंगे ।

औंध (जि० सातारा)
फाल्गुन शु० १
संवत् १९८४

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,
स्वाध्याय-मंडल.

प्रकाशक—श्रीपाद दामोदर सातवळेकर, (स्वाध्याय-मंडलके लिये)
(औंध, जि० सातारा.)

मुद्रक—रामचंद्र येसु शेडगे, 'निर्णयसागर' छापखाना,
२६–२८ कोलभाट गल्ली, मुंबई.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

शतपथ-बोधामृत ।

(प्रथम काण्ड १)

17938

प्रथम अध्याय

(ब्राह्मण १)

(१) अ-मेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति ।

Man is impure on account of his speaking untruth.

निश्चयसे मनुष्य अपवित्र है जो असत्य बोलता है ।

ॐ ॐ ॐ

(२) तेन पूतिरन्तरतः ।

Therefore internal purification is required.

इस लिये आंतरिक शुद्धि आवश्यक है ।

ॐ ॐ ॐ

(३) मेध्यो भूत्वा व्रतमुपायानि ।

After becoming pure, I will enter on the vow.

पवित्र बन करु नियम पालन करूंगा ।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) पवित्रपूतो व्रतमुपायानि ।

Having become purified through the purifying one, I will enter on the vow.

पवित्रके साथ शुद्ध बनकर व्रतका पालन करूंगा ।

ॐ ॐ ॐ

(५) द्वयं वा इदं न तृतीयमस्ति । सत्यं चैवाऽनृतं च ॥

Twofold, verily, is this, there is no third, viz., truth and untruth.

इसमें दो ही हैं, तीसरा नहीं है । सत्य और असत्य ।

ॐ ॐ ॐ

(६) सत्यमेव देवा अनृतं मनुष्याः ॥

Verily the Devas are truth & men are untruth.

निश्चयसे देव सत्य हैं और मनुष्य असत्य हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(७) इदमहमनृतात्सत्यमुपैमीति तन्मनुष्येभ्यो देवानुपैति ॥

I now enter from untruth into truth, he passes from men to the Devas.

अब मैं असत्य छोडकर सत्यको पकडता हूं, ऐसे निश्चयसे वह मनुष्योंमेंसे देवोंमें पहुंचता है ।

ॐ ॐ ॐ

(८) स वै सत्यमेव वदेत् ॥

Let him then only speak what is true.

वह सत्य ही बोले.

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(९) एतद्ध वै देवा व्रतं चरन्ति यत्सत्यं । तस्मात्ते यशः ।

For this vow indeed the Devas do keep, that they speak the truth; and for this reason they are glorious.

देव निश्चयसे यह ही व्रत आचरते हैं जो सत्य है । इसलिये वे यशस्वी होते हैं ।

* * *

(१०) यशो ह भवति य एवं विद्वान् सत्यं वदति ॥

Glorious therefore is he who, knowing this, speaks the truth.

वह भी यशस्वी होता है जो ऐसा जानकर सत्य बोलता है ।

* * *

(११) इदमहं य एवास्मि सोऽस्मि ।

Now I am he who I really am.

अब मैं वह ही हूं जो मैं वास्तवमें हूं ।

* * *

(१२) न हि तदवकल्पते यद्ब्रूयादिदमहं
सत्यादनृतमुपैमि ॥

It would not be becoming for him to say, I enter from truth into untruth.

वैसा बोलना उसके लिये योग्य नहीं कि मैं सत्यसे असत्यको स्वीकार करता हूं ।

* * *

(१३) मनो ह वै देवा मनुष्यस्याजानन्ति ॥

Assuredly, the Devas see through the mind of man.

निश्चयसे देव मनुष्यको मनके अंदरसे देखते हैं ।

* * *

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१४) तन्वेवानवक्लृप्तम् । यो मनुष्येष्वनश्नत्सु पूर्वोऽश्नीयात् ॥

Now it would even be unbecoming for him to take food, before guests have eaten.

यह निश्चयसे अयोग्य है कि जो अन्य मनुष्यों (अतिथियों) का भोजन होनेसे पूर्व अकेलेने ही भोजन करना है ।

ॐ ॐ ॐ

(१५) देवान्वा एष उपावर्तते यो व्रतमुपैति ॥

He who enters on the vow approaches the Devas.

जो नियम पालन करता है वह देवोंको प्राप्त होता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१६) अधस्तादिव हि श्रेयस उपचारः ॥

From below, as it were, one serves one's superior.

नीचेसेही बडोंकी सेवा की जाती है ।

ॐ ॐ ॐ

(१७) अ–निरुक्तो वै प्रजा–पतिः । प्रजा–पतिर्यज्ञः ॥

Prajâpati is undefined, Prajâpati is sacrifice.

प्रजापति अवर्णित है । प्रजापति यज्ञ है ।

ॐ ॐ ॐ

(१८) कस्त्वा युनक्ति । स त्वा युनक्ति ॥

Prajâpati yokes thee, he joins thee.

परमात्मा तुमको नियुक्त करता है । वह ही तुमको नियुक्त करता है ।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१९) अद्भिर्वा इदं सर्वमाप्तम् ॥

All this is pervaded by Âpas (pervading element).

इस सबमें व्यापक-तत्त्व अर्थात् आप् भरा है।

* * *

(२०) देवान् ह वै यज्ञेन यजमानांस्तानसुररक्षसानि ररक्षुर्न यक्ष्यध्वमिति । तद्यदरक्षंस्तस्माद्रक्षांसि ॥

Whilst the Devas were engaged in performing sacrifice, the Asuras and Rākshasas forbade them, saying ye shall not sacrifice; and because they forbade, they are called Râkshasas.

देव यज्ञ करते थे, उनको राक्षसोंने प्रतिबंध किया और कहा कि यज्ञ न करो। इस लिये प्रतिबंध करनेवाले राक्षस कहलाते हैं।

* * *

(२१) एष एतं वज्रमुद्यच्छति तस्याऽभयेऽनाष्ट्रे निवाते यज्ञं तनुते ॥

He takes up this thunderbolt, and in its safe and foeless shelter they spread the sacrifice.

वह इस शस्त्रको धारण करता है और उस शस्त्रके अभयमें और शत्रुरहित आश्रयमें सत्कर्मका प्रचार करता है।

* * *

(२२) गृहा वै प्रतिष्ठा ॥

A house is a safe resting-place.

सुरक्षित विश्रामका स्थान ही घर है।

* * *

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२३) योषा वा आपो वृषाऽग्निः । मिथुनमेवैतत्प्रजननं क्रियते । एवमेव हि मिथुनं क्लृप्तम् । उत्तरतो हि स्त्री पुमांसमुपशेते ॥

Water is female and fire is male: Hence a copulation productive of offspring is thereby effected and in this way alone a regular copulation can take place, since the woman lies on the left side of the man.

जल स्त्री है और अग्नि पुरुष है । प्रजा उत्पन्न करनेके लिये जोडा बनाया जाता है । इसी प्रकार जोडा होता है । पुरुषकी उत्तर दिशामें स्त्री बैठती है ।

ॐ ॐ ॐ

(२४) ता नान्तरेण संचरेयुः ।

Let nobody pass between them.

उनके बीचमें से कोई न गुजरे । (पतिपत्नीमें कोई झगडा न खडा करे)

ॐ ॐ ॐ

(२५) द्वन्द्वं वै वीर्यम् ॥

A pair means strength.

द्वंद्व निश्चयसे बल है ।

ॐ ॐ ॐ

(२६) यदा वै द्वौ संरभेते अथ तद्वीर्यं भवति ॥

When two undertake anything, there is strength in it.

जब दो मिलकर कार्य प्रारंभ करते हैं, उनमें बल आता है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम अध्याय

(ब्राह्मण २)

(२७) कर्मणे वां वेषाय वाम् ॥ (वा. य. १।६)

For the work I take you, for accomplishment I take you.

उद्योग के लिये और पूर्णताके लिये मैं तुमको स्वीकार करता हूं।

ॐ ॐ ॐ

(२८) अथ वाचं यच्छति ।

He then controls his speech.

अब वह अपनी वाणी का नियमन करता है।

ॐ ॐ ॐ

(२९) वाग्वै यज्ञोऽविक्षुब्धो यज्ञं तनवा इति ॥

Speech means undisturbed sacrifice; so that in so doing he thinks: may I accomplish the sacrifice.

वाचा ही प्रशांत यज्ञ है । इससे मैं यज्ञकी पूर्णता करूंगा ऐसा वह मानता है।

ॐ ॐ ॐ

(३०) यज्ञाद्यज्ञं निर्मिमा इति ॥

From the sacrifice I will perform the sacrifice.

यज्ञसे यज्ञ निर्माण करता हूं।

ॐ ॐ ॐ

(३१) यतो ह्येव युञ्जन्ति ततो विमुञ्चन्ति ॥

From where they yoke, they also unyoke.

जहांसे संयुक्त करते हैं वहांसे ही बंधनसे मुक्त करते हैं।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३२) य एनद्वहन्त्यग्निदग्धमिवैषां वहं भवति ॥

The shoulder of those that carry this, becomes as if burnt by fire.

जो कंधेसे उठाकर खेंचते हैं उनके ही खंधे अग्निसे जले हुए के समान होते हैं।

ॐ ॐ ॐ

(३३) धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्व ॥ (य. १।८)

Injure thou the injurer! injure him that injures us all.

दुःख देनेवालेका नाश करो, जो हम सबका घात करता है उसका नाश करो।

ॐ ॐ ॐ

(३४) अर्धमासशो वाऽहं सपत्नान् धूर्वामि ॥

Every half-month I destroy the enemies.

प्रत्येक अर्धमासमें मैं शत्रुओंका नाश करता हूं।

ॐ ॐ ॐ

(३५) देवानामसि वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

To the Devas thou belongest, thou the best carrying one, the most firmly joined, the most richly filled, the most agreeable, the best caller of Devas.

तू देवोंकाही है, जो तू उत्तम चलानेवाला, अत्यंत स्थिर, परिपूर्ण प्रीति करने योग्य और देवोंको बुलानेवाला है।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३६) अह्रुतमसि हविर्धानं । दंहस्व । मा ह्वाः ॥

Thou art unbent, the supporter of food, be thou firm, waver not.

तू तेढा नहीं है, तू अन्नका आश्रय है, स्थिर रहो, चंचल न होओ।

ॐ ॐ ॐ

(३७) विष्णुस्त्वा क्रमतामिति ॥ (य. १।९)

May Vishṇu ascend thee.

व्यापक ईश्वर तुमको ऊपर उठावे।

ॐ ॐ ॐ

(३८) स देवेभ्य इमां विक्रान्तिं विचक्रमे ॥

He obtained for the Devas this all-pervading power.

उसने देवोंके लिये ही यह पराक्रमकी शक्ति दी है।

ॐ ॐ ॐ

(३९) उरु वातायेति प्राणो वै वातः ॥

Wide open be thou to the wind, for wind means life.

तू वायुके लिये खुला रह, क्योंकि वायु ही प्राण है।

ॐ ॐ ॐ

(४०) यच्छन्तां पञ्चेति ॥ (य. १।९)

Let the five take.

पांचों प्राप्त करें।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४१) भूताय त्वा नारातये ।

For prosperity I leave thee, and not for uncharitableness.

उन्नति के लिये मैं तुम्हें छोडता हूं, न कि दान-हीन-ता के लिये ।

ॐ ॐ ॐ

(४२) स्वरभि विख्येषम् ॥ (य. १।११)

May I perceive the light.

मैं प्रकाशका अनुभव कर सकूं ।

ॐ ॐ ॐ

(४३) दृंहन्तां दुर्याः पृथिव्याम् ॥

May houses stand firm on this earth.

पृथिवीपर घर स्थिर रहें ।

ॐ ॐ ॐ

(४४) तथा नानु प्रच्यवन्ते तथा न विक्षोभन्ते ॥

They may not break down, nor they crush.

वे न गिर जांय और न नष्ट होवें ।

ॐ ॐ ॐ

(४५) पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयामीति । मध्यं वै नाभिः । मध्यमभयम् ॥

On the navel of the earth I place thee, for navel means the centre and the centre is safe from danger.

मैं तुमको पृथ्वीके नाभिपर रखता हूं । क्यों कि नाभि का अर्थ मध्य है और मध्यही निर्भय होता है ।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४६) आदित्या उपस्थ इत्युपस्थ इवैनदभार्षुरिति वा आहुर्यत्सुगुप्तं गोपायन्ति ।

In the lap of Bound-less, for when people guard anything very carefully, they commonly say that they carried it in their lap.

अमर्याद की गोदमें रखता हूं। जिस समय किसी की उत्तम प्रकारसे रक्षा करनी होती है उस समय कहते हैं कि गोदमें रखते हैं।

ॐ ॐ ॐ

(४७) परिददाति गुप्त्या अस्यै च पृथिव्यै ॥

He gives this for his protection and for the country.

अपने और भूमिके संरक्षणके लिये दान देता है।

प्रथम अध्याय

(ब्राह्मण ३)

(४८) पवित्रे स्थः ॥

Purifiers are ye.

आप शुद्ध करने वाले हैं।

ॐ ॐ ॐ

(४९) अयं वै पवित्रं योऽयं पवते ॥

Purifier is this who purifies.

पवित्र कारक यह ही है कि जो शुद्ध करता है।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५०) ऐते वा उत्पवितारो यत्सूर्यस्य रश्मयः ॥

They, the rays of the sun, are certainly purifying.

सूर्यके किरण निःसंदेह शुद्धता करनेवाले हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(५१) अग्र इदमद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञपतिं सुधातुं यज्ञ-पतिं देवयुवमिति ॥

Forward now lead this sacrifice, forward the protector of sacrifice, the liberal, god-loving.

आजही यज्ञ–सत्कर्म-को आगे वढाइए, यज्ञके पालक को आगे वढाइए, जो उदार और ईश्वरका भक्त है ।

ॐ ॐ ॐ

(५२) दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वम् ॥ (य. १।१३)

Be ye pure for the divine work.

दिव्य कर्म के लिये शुद्ध हो जाइए ।

ॐ ॐ ॐ

(५३) यद्वोऽशुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुन्धामि ॥

Whatever impure, that obstructs, I purify for you.

जो अशुद्धता, घात करती है, मैं आपके लिये शुद्ध करता हूं ॥

प्रथम अध्याय

(ब्राह्मण ४)

(५४) सैषा त्रयी विद्या यज्ञः ॥

This three-fold science is the sacrifice.

तीन प्रकारका विज्ञान ही यज्ञ है ।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५५) शर्माऽसि ॥ (य. १।१४)

Bliss art thou.

तू सुख है।

(५६) अवधूतं रक्षोऽवधूता अरातयः ॥ (य. १।१४)

Shaken off are the Râkshasas, shaken off are the enemies.

राक्षसों और शत्रुओंको भगा दिया है।

(५७) यद्यस्यामेध्यमभूत्तद्यस्यै तदवधुनोति ॥

He shakes off whatever impurity there may have been.

वह दूर करता है जो कुछ अशुद्धता वहां होती है।

(५८) नेदन्योऽन्यं हिनसाते ॥

They will not hurt each other.

वे एक दूसरेका घातपात नहीं करेंगे।

(५९) अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनम् ॥

Thou art the body of fire and the releaser of speech.

तू अग्निका देह और वाणीका प्रेरक है।

(६०) देववीतये त्वा गृह्णामि ॥

I accept thee for the pleasure of God.

ईश्वरकी संतुष्टताके लिये मैं तुम्हारा स्वीकार करताहूं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६१) संस्कुरु साधुसंस्कृतं संस्कुरु ॥

Do thou prepare it thoroughly, get it quite ready.

उत्तम संस्कार करो, उत्तम सुसंस्कारोंसे सिद्ध करो।

ॐ ॐ ॐ

(६२) मधुजिह्वो वै स देवेभ्य आसीद्विषजिह्व असुरेभ्यः ॥

Honey-tongued indeed was he for the Devas and poison-tongued for the devils.

मीठी जवान वाला वह देवोंके लिये था और कडवी जवान वाला राक्षसोंके लिये था।

ॐ ॐ ॐ

(६३) इषमूर्जमा वद त्वया वयं संघातं संघातं जेष्म ॥

Food and strength do thou call hither! With thy help may we conquer in every battle.

अन्न और बल को यहां पास बुलाओ। इसकी सहायतासे हम प्रत्येक युद्धमें विजय पायेंगे।

द्वितीय अध्याय

(ब्राह्मण १)

(६४) एकं सह करवाव, समानं करवाव ॥

Let us make that one together, let us make it equal.

हम सब साथ मिलकर एक कार्य करेंगे, तथा समानतासे करेंगे।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६५) धृष्टिरसि ॥ (य. १।१७)

Bold art thou.

तू धैर्यशाली है।

ॐ ॐ ॐ

(६६) अपाग्ने अग्निमामादं जहि निष्क्रव्यादं सेध ॥ (य. १।१७)

O light, cast off that fire which eateth raw flesh! Drive away the corpse-eating one.

हे तेजस्वी! जो कच्चा मांस खाता है उस अग्निको दूर करो। तथा उसको भगाओ कि जो मुर्दा खाता है।

ॐ ॐ ॐ

(६७) पृथिव्या एव रूपेणैतदेव दंहत्येतेनैव द्विषन्तं भ्रातृव्यमवबाधते ॥

Under the form of the earth he renders this firm, and chases away the spiteful enemy.

भूमिके रूपसे वह इसको दृढ बनाता है और निंदक शत्रु का प्रतिकार करता है।

ॐ ॐ ॐ

(६८) ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि। भ्रातृव्यस्य वधाय ॥ (य. १।१७)

Thee, devoted to the Learned, to the Brave, and to the Kinsmen, I receive for destruction of the enemy.

ज्ञानी, शूर और सजातियोंके साथ प्रेम करनेवाले आपका मैं शत्रुविनाशके लिये स्वीकार करता हूं।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६९) तद्ब्रह्म च क्षत्रं चाशास्त उभे वीर्ये ॥

He prays for the welfare of the Learned and Brave, because these two are the towers of strength.

ज्ञानी और शूरोंका हित चाहता है क्योंकि ये दो शक्तिके पुंज हैं।

ॐ ॐ ॐ

(७०) भूमा वै सजाताः ॥

Kinsmen are wealth.

स्वजाति ही धन है।

ॐ ॐ ॐ

(७१) ब्रह्म गृभ्णीष्व ॥ (य. १।१८)

Accept holy knowledge (or holy action).

उत्तम ज्ञान (किंवा पवित्र कर्म) प्राप्त करो।

ॐ ॐ ॐ

(७२) धरुणमसि ॥ (य. १।१८)

A supporter art thou.

तू आधार है।

ॐ ॐ ॐ

(७३) धर्त्रमसि ॥ (य. १।१८)

A stay art thou.

तू धारक है।

ॐ ॐ ॐ

(७४) भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यध्वम् ॥ (य. १।१८)

May ye be purified by the heat of Bhrigus and Angiras.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भृगु और अङ्गिराओंके तपसे आप तपकर शुद्ध हूजिए ।

ॐ ॐ ॐ

(७५) प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषे धाम् ॥ (य. १।२०)

I take thee for out-breathing, in-breathing and for through-breathing, may I impart a long duration to the life.

प्राण, उदान और व्यानके लिये तेरा स्वीकार करता हूं। मुझे दीर्घ आयु प्राप्त होवे ।

ॐ ॐ ॐ

(७६) महीनां पयोऽसि ॥ (य. १।२०)

Thou art the milk for the great.

तूं श्रेष्ठोंके लिये दूध है ।

ॐ ॐ ॐ

द्वितीय अध्याय (ब्राह्मण २)

(७७) समाप ओषधीभिः ॥ (य. १।२१)

Let the waters mingle with the plants.

औषधियोंके साथ जल उत्तम रीतिसे मिले ।

ॐ ॐ ॐ

(७८) समोषधयो रसेन ॥ (य. १।२१)

Let the plants mingle with the sap.

औषधियां रसके साथ रहें ।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७९) सं रेवतीर्जगतीभिः पृच्यन्ताम् ॥ (य. १।२१)

The shining one should be mixed with the moving ones.

तेजस्वी मिलें गति करनेवालोंके साथ ।

ॐ ॐ ॐ

(८०) सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम् ॥ (य. १।२१)

Let the sweet mingle with the sweet.

मधुर मधुरोंके साथ मिलें ।

ॐ ॐ ॐ

(८१) सं रसवत्यो रसवतीभिः पृच्यन्ताम् ॥

Let the savoury be mixed with the savoury.

रसवाले रसवालोंके साथ मिलें ।

ॐ ॐ ॐ

(८२) जनयत्यै त्वा संयौमि ॥ (य. १।२२)

For generation I unite thee.

प्रजाकी उत्पत्तिके लिये मैं तुमको संयुक्त करता हूं ।

ॐ ॐ ॐ

(८३) श्रियेऽन्नाद्याय ॥

For prosperity and for food &c. I unite thee.

उन्नति और अन्न आदि के लिये भी ।

ॐ ॐ ॐ

(८४) घर्मोऽसि ॥ (य. १।२२)

Heat art thou.

तू उष्णता है ।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८५) विश्वायुरिति तदायुर्दधाति ॥

Life-sustaining is he, therefore he obtains life.

वह सव आयु का धारक है इसलिये आयु प्राप्त करता है।

(८६) उरु प्रथस्व ॥ (य. १।२२)

Spread widely.

बहुत विस्तार करो।

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

(८७) नेद्व्यृद्धं यज्ञे करवाणि ॥

I may not do any thing that is unfair in the sacrifice.

मैं यज्ञ में कोई विरुद्ध कार्य न करूं।

(८८) मा भेर्मा संविक्थाः ॥ (य. १।२३)

Be not afraid! Shrink not!

निर्भय रहो। पीछे न हटो।

द्वितीय अध्याय

(ब्राह्मण ३)

17938

(८९) उपैवेम एनो गच्छन्तु येऽस्य वध्यस्यावेदिषुः ॥

Let those be guilty of the sin who know about his going to be killed.

वेभी दोषी समझे जांय कि जिनको उनके वधके विषयमें पता था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय अध्याय ।

(ब्राह्मण ४)

(९०) वायुरसि तिग्मतेजा इति । एतद्वै तेजिष्ठं तेजो यदयं योऽयं पवते ।

The sharp-lustered Vâyu art thou. That is the brilliant luster which here blows.

तू तीक्ष्ण तेजवाला वायु है । यह ही तीक्ष्ण तेज है कि जो बहता है ।

* * *

(९१) देवाश्च वा असुराश्च । उभये प्राजापत्याः पस्पृधिरे ते ह स्म यद्देवा असुरान् जयन्ति ततो ह स्मैवैनान् पुनरुपोत्तिष्ठन्ति ॥

The Devas and Asuras, both of them sprung from Prajapati, were contending for superiority. The Devas vanquished the Asuras; and yet these afterwards harassed them again.

प्रजापतिसे ही देव और असुर उत्पन्न हुए हैं । वे आपसमें स्पर्धा करते रहे । देवोंने असुरोंका पराभव किया । परंतु वे फिर बार बार देवोंको कष्ट देते रहे ।

* * *

(९२) ते ह देवा ऊचुः । जयामो वा असुरांस्ततस्त्वेव नः पुनरुपोत्तिष्ठन्ति कथं न्वेनाननपजय्यं जयेमेति ।

The Devas then said we do, no doubt, vanquish the Asuras, but never-the-less they afterward again

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

harass us. How then can we vanquish them so that we need not fight them again?

देव बोले कि, हम असुरोंका पराजय करते हैं, परंतु वे फिर भी हमें कष्ट देते हैं। किस प्रकार उनका ऐसा पराभव करें कि जिससे उनके साथ झगडना न पडेगा?

ॐ ॐ ॐ

(९३) ओषध्यास्ते मूलं मा हिंसिषम् ॥ (य. १।२५)

May I not injure the root of any plant.

मैं किसी औषधीके जडोंका भी घात पात न करूं।

द्वितीय अध्याय।

(ब्राह्मण ६)

(९४) असुरा मेनिरेऽस्माकमेवेदं खलु भुवनमिति ॥

The Asuras thought: "To us alone assuredly belongs this world".

राक्षसोंने समझा कि निश्चयसे हमारे लियेही यह भूमि है।

ॐ ॐ ॐ

(९५) संग्रामो वै क्रूरं। संग्रामे हि क्रूरं क्रियते। हतः पुरुषो हतोऽश्वः शेते ॥

The bloody one no doubt is the battle, for in the battle bloody deeds are done and slain lie man and horse.

---

१ सद्भाव देव हैं और दुष्टभाव असुर हैं। दुष्टभावोंको पराजित करने पर भी वे वारंवार फिर उठते ही हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चयसे युद्ध क्रूर कर्म है । क्यों कि युद्ध में क्रूरता की जाती है । युद्धमें मनुष्य और घोडे मारे जाते हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(९६) यद्वास्यै क्रूरमभूत्तद्वास्या एतदहार्षीत् ॥

What there was bloody on it that he thereby removes from it.

जो कुछ उसमें क्रूरता थी, उसको दूर किया ।

तृतीय अध्याय ।

(ब्राह्मण १)

(९७) यथा वै देवानां चरणं तद्वा अनु मनुष्याणाम् ॥

The course pursued among the Devas is in accordance with that pursued among men.

जिस प्रकार देवोंका आचरण होता है उसीप्रकार मनुष्योंका ।

ॐ ॐ ॐ

(९८) अथ पात्राणि निर्णिजति । तैर्निर्णिज्य परिवेविषति ॥

They rinse the vessels, and having rinsed them they serve up the food with them.

वे बर्तन मांजकर शुद्ध करते हैं और शुद्ध वर्तनोंसे परोसते हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(९९) योक्त्रेण हि योग्यं युञ्जन्ति ।

With a yoke they yoke the fit (animal).

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुएके योग्य को ही जोतते हैं।

ॐ ॐ ॐ

(१००) अस्ति वै पत्न्या अमेध्यं यदवाचीनं नाभेः ॥

Impure indeed is that part of woman which is below the navel.

नाभिके निचला स्त्रीका भाग अपवित्र है।

ॐ ॐ ॐ

(१०१) रेत आज्यम् ।

The butter represents seed.

घी वीर्य अर्थात् बीज है।

ॐ ॐ ॐ

(१०२) तथो ह यज्ञात्पत्नीं नान्तरेति ।

Therefore, he does not exclude the wife from the sacrifice.

इसलिये धर्मपत्नीको यज्ञसे दूर वह (पति) नहीं रखता।

ॐ ॐ ॐ

(१०३) सत्यं वै चक्षुः । सत्यं हि वै चक्षुः । तस्माद्यदिदानीं द्वौ विवदमानावेयातामहमदर्शमहमश्रौषमिति । य एव ब्रूयादहमदर्शमिति तस्मा एव श्रद्दध्याम तत्सत्येनैवैतत्समर्द्धयति ॥

The eye assuredly is the truth, for the eye is indeed the truth. If therefore, two persons were to come disputing with each other and saying 'I have seen it!' 'I have heard it!' we should believe him who said 'I have seen it!' and not the other. Hence he thereby causes it to increase by means of the truth

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेत्र ही सत्य है। निश्चयसे आंख ही सत्य है। यदि दो मनुष्य आपसमें विवाद करते हुए हमारे पास आगये, उनमेंसे एक कहता है कि 'मैंने देखा है' और दूसरा कहता है कि 'मैंने सुना है'। हम उसी का सत्य मानेंगे कि जिसने कहा कि 'मैंने देखा है' न कि दूसरेका। इस लिये सत्यसे इसकी वृद्धि करता है।

तृतीय अध्याय।

(ब्राह्मण २)

(१०४) पुरुषो वै यज्ञः। पुरुषस्तेन यज्ञो यदेनं पुरुषस्तनुते। एष वै तायमानो यावानेव पुरुषस्तावान् विधीयते तस्मात् पुरुषो यज्ञः ॥

Now the sacrifice is the man. The sacrifice is the man for the reason that the man performs it; and that it is made of exactly the same extent as the man: this is the reason why the sacrifice is the man.

मनुष्य ही यज्ञ है। इसलिये कि मनुष्य ही उसको करता है। और मनुष्य उतना ही सत्कर्म करता है कि जितना वह स्वयं होता है। इस लिये यज्ञही मनुष्य है।

(१०५) इमा विशः क्षत्रियाय बलिं हरन्ति। ...। क्षत्रियस्यैव वशे सति वैश्यं पशव उपतिष्ठन्ते। ....। यदोत क्षत्रियः कामयतेऽथाह वैश्य मयि यत्ते परो निहितं तदाहरेति। तं जिनाति स्वयथा स्वत्कामयते तथा सचतऽएतेनो ह तद्वीर्येण ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Thereby the people pay tribute to the Kshatriya ... Vaishya under the rule of the Kshatriya, becomes possessed of cattle; ... whenener the Kshatriya likes, he says, 'Hallo, Vaishya, just bring to me what thou hast stored away.' Thus he both subdues him and obtains possession of anything he wishes by dint of his very energy.

इस लिये लोक क्षत्रिय को कर देते हैं।...क्षत्रियके शासनमें रहता हुआ वैश्य पशु आदि प्राप्त करता है। ...जब क्षत्रिय चाहता है, कहता है कि 'हे वैश्य! जो कुछ तुमारे पास संग्रह है, ले आओ' इस प्रकार अपनी शक्तिके कारण केवल आज्ञासे ही क्षत्रिय वैश्यको आधीन रखता और चाहे सो प्राप्त कर सकता है।

तृतीय अध्याय ।

(ब्राह्मण ३)

(१०६) यत्र वा अस्यै बहुलतमा ओषधयः । तदस्या उपजीवनीयतमम् ।

Where the plants are most abundant on her, there the means of subsistence are most amply afforded by her.

जहां पृथ्वीपर बहुत औषधियां होतीं हैं वहां ही जीवनका साधन (अन्न) बहुत प्राप्त होता है।

ॐ ॐ ॐ

(१०७) अधरमूला इव हीमा अस्यां पृथिव्यामोषधयः प्रतिष्ठितास्तस्मादधरमूलं स्तृणाति ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

For it is with their roots below that those plants are firmly established in this earth. For this reason he spreads it with roots below.

वृक्ष अपने जडोंके आधार से ही दृढ रहते हैं, इसलिये नीचे जडोंके साथही वह फैलाता है।

तृतीय अध्याय ।

(ब्राह्मण ४)

(१०८) ते वा आर्द्राः स्युः । एतद्ध्येषां जीवमेतेन सतेजस एतेन वीर्यवन्तस्तस्मादार्द्राः स्युः ॥

They should be fresh; for that is their living element, by that they are vigorous, by that possessed of strength for this reason they should be fresh.

वे नवीन रहें। नवीनता ही इनका जीवन है, इसीसे तेज और वीर्य होता है। इसलिये नवीन रहें।

ॐ ॐ ॐ

(१०९) इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै ।

(य. २।३)

Thou art Indra's right arm for the security of all!

तू इन्द्र (क्षत्रिय) का सीधा हाथ सबकी रक्षा के लिये है।

ॐ ॐ ॐ

(११०) सूर्यो हि नाष्ट्राणां रक्षसामपहन्ता ।

For the sun is the repeller of the evil spirits, the Râkshasas.

सूर्य ही विनाशक राक्षसों को दूर करनेवाला है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१११) ध्रुवा असदन्नृतस्य योनाविति।

Safely indeed they sat down in the lap of divine truth.

दिव्य सत्यकी गोदमें वे सुरक्षित बैठते हैं।

तृतीय अध्याय।

(ब्राह्मण ६)

(११२) सर्वं वै प्रजापतिः।

Verily Prajâpati is all.

प्रजापति सब कुछ है।

* * *

(११३) अनिरुक्तं सा उपांशु सर्वं वा अनिरुक्तम्।

What is spoken in a low voice is undefined and undefined is the 'All'.

छोटी आवाज में किया हुआ भाषण अव्यक्त होता है। सब कुछ अव्यक्त ही है।

* * *

(११४) गायत्री वै प्राणः। स यत्कृत्स्नां गायत्रीमन्वाह। तत्कृत्स्नं प्राणं दधाति।

Gâyatri is indeed breath; and that reciting a complete Gâyatri verse, he accordingly bestows complete breathing.

गायत्री ही प्राण है। एक गायत्री मन्त्रका जप करनेसे एक पूर्ण प्राण की धारणा होती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ अध्याय ।

(ब्राह्मण १)

(११५) प्रेति वै प्राण एत्युदानः । प्राणोदानावेवैतद्-
धाति ।

'Pra' (forth) clearly means outbreathing, and 'Â' (hither) means inbreathing: hence he thereby obtains outbreathing and inbreathing.

'प्र' का निश्चयसे अर्थ प्राण है और 'आ' का अर्थ उदान है इनसे वह प्राण और उदान धारण करता है ।

ॐ ॐ ॐ

(११६) कथं नु न इमे लोका वितरां स्युः । कथं न
इदं वरीय इव स्यादिति ।

How could these worlds of ours become farther apart from one onother ? How could there be more space for us ?

ये हमारे लोक एक दूसरे से दूर किस प्रकार होंगे, अर्थात् हमारे लिये अधिक विस्तृत स्थान किस प्रकार मिलेगा ?

ॐ ॐ ॐ

(११७) देवाश्च वा असुराश्चोभये प्राजापत्याः पस्पृ-
धिरे । तान्स्पर्धमानान्गायत्र्यन्तरा तस्थौ । या
वै सा गायत्र्यासीदियं वै सा पृथिवी ।

Devas & Asuras, both of them sprang from Prajâpati, were contending for superiority. The Gâyatri stood between them. She was the same as this earth.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव और असुर-दोनों प्रजापति के पुत्र-उच्च अधिकार के लिये स्पर्धा करते थे। उनके बीचमें गायत्री खडी रही। जो गायत्री थी वह ही यह पृथिवी है।

ॐ ॐ ॐ

(११८) नेद् व्यृद्धं यज्ञे करवाणीति।

He should not do anything that is inauspicious at the sacrifice.

यज्ञके समय अपवित्रता न की जावे।

चतुर्थ अध्याय।

(ब्राह्मण २)

(११९) यथेदमप्येतर्हि ज्ञातीनां यं गरिष्ठे युञ्जन्ति। तमुपमदन्ति वीर्यवान्वै त्वमस्यलं वै त्वमेतस्माऽअसीति।

Even as in our own days, when they appoint any one from among their kinsmen to the chief office, they cheer him up saying, 'Surely, thou art vigorous; surely, thou art equal to this!'

आज कलके समयमें भी जब कि अपनी जातियोंमेंसे योग्य पुरुषको मुख्य अधिकार के लिये चुनते हैं तब उसको उत्तेजित करते हैं और कहते हैं कि 'तू बलवान है और इस स्थान के लिये योग्य है।'

ॐ ॐ ॐ

(१२०) ब्रह्म ह्यग्निः।

Agni, indeed, is Brahman.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चयसे अग्नि ही ब्राह्मण है ।

ॐ ॐ ॐ

(१२१) स्वं महिमानमावह ।

Your own greatness bring hither.

अपनी महत्ताको यहां ले आओ ।

चतुर्थ अध्याय ।

(ब्राह्मण ३)

(१२२) बृहच्छोचा यविष्ठ्येति ।

Shine forth, O youngest, brilliantly.

हे तरुण ! तेजस्विताके साथ प्रभावित होकर बढ़ो ।

ॐ ॐ ॐ

(१२३) श्रोत्रं वै पृथु श्रवाय्यं श्रोत्रेण हीदमुरु पृथु शृणोति ।

'For hearing one,' indeed, is the ear, for it is with the ear that one hears here far or widely.

कान ही बहुत सुननेवाला है । क्यों कि यहां कान से ही हरएक बहुत और दूरसे सुनता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१२४) अश्वो न देववाहन इति । मनो वै देववाहनं मनो हीदं मनस्विनं भूयिष्ठं वनीवाह्यते । मन एवैतया समिन्धे ।

Further, 'yea, as a horse that bears to the Devas;' that which conveys to the Devas is indeed

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

the mind, for it is the mind which chiefly conveys the wise man to the Devas: the mind he accordingly kindles with this.

देवों का वाहन अश्व है। मन ही देवोंका वाहन अश्व है। क्यों कि मनही बुद्धिमान पुरुषको मुख्यतः देवोंतक पहुंचाता है। इस लिये इससे मन को प्रदीप्त किया जाता है.

चतुर्थ अध्याय ।

(ब्राह्मण ४)

(१२५) मनश्च हैव वाक्च युजौ देवेभ्यो यज्ञं वहतः ।

Mind & speech, when yoked together, convey the sacrifice to the Devas.

मन और वाणी मिलकर यज्ञ देवोंतक पहुंचाते हैं।

ॐ ॐ ॐ

(१२६) त एतद्दक्षिणतः प्रत्युदश्रयन्नुच्छ्रितमिव हि वीर्यम् ।

They therefore stood up erect against the enemies, on the sound side; for strength is, indeed, erect.

इसलिये वे देव शत्रुओंके मुकाबलेमें सीधे सुरक्षित स्थानपर खडे रहे। क्यों कि सीधापनही बल है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ अध्याय ।

(ब्राह्मण ९)

(१२७) मा त्वावक्रमिषमिति ।

May I not sin against thee!

मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूंगा ।

(१२८) ते छायामुपस्थेषमिति ।

May I step into thy shade.

मैं तेरी छायामें रहूंगा ।

ॐ ॐ ॐ

(१२९) ऊर्ध्वोऽध्वर आस्थादिति ।

High stood the deed free from cruelty.

हिंसा रहित कर्म उच्च होता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१३०) श्रीर्हि वै शिरस्तस्माद्योऽर्द्धस्य श्रेष्ठो भवत्यसावमुष्यार्द्धस्य शिर इत्याहुः ।

For the head does indeed represent excellence: hence, of one who is the most excellent of a community; people say that he is 'the head of that community.'

सिर ही श्रेष्ठता है । इस लिये लोगोंमें जो सबसे श्रेष्ठ होता है, उसको सब कहते हैं कि यह उस जाति का सिर है ।

ॐ ॐ ॐ

(१३१) श्रेयसो वै पापीयान्कृतानुकरोऽनुवर्त्मा भवति ।

Inferior, surely is he who simply imitates his better's deeds and follows in his wake.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीन मनुष्य ही श्रेष्ठका केवल अनुकरण करता है और उसके मार्गपर चलता है। (केवल अविचारी अनुकरण करना बुरा है।)

पंचम अध्याय।

(ब्राह्मण १)

(१३२) ज्यायसस्पतय उ चैवैतन्निहुते।

He also propitiates the Lord of seniority.

वह बडेपनके स्वामीको ही पूजता है।

ॐ ॐ ॐ

(१३३) जुष्टमद्य देवेभ्योऽनूच्यासमित्येवैतदाह।
तद्धि समृद्धं यो जुष्टं देवेभ्योऽनु ब्रवत्।

'May I this day speak what is agreeable to the Devas,' for auspicious it is when one speaks what is agreeable to Devas.

मैं आजसे ही देवताओंको जो प्रिय होगा वही बोलूंगा। क्योंकि जो देवोंको प्रिय होता है वही शुभ होता है।

ॐ ॐ ॐ

(१३४) विश्वकर्मंस्तनूपा असि।

O All-maker, thou art the protector of lives!

हे सबकी उत्पत्ति करनेवाले! तू सबके जीवोंकी रक्षा करनेवाला है।

ॐ ॐ ॐ

(१३५) विश्वेदेवाः शास्त।

All ye Devas, instruct me.

हे सब देवो! मुझे उपदेश कीजिए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम अध्याय ।

(ब्राह्मण २)

(१३६) ईडामहै देवाँ२।।ऽईडेन्यान्नमस्याम नमस्यान् यजाम यज्ञियानिति ।

Let us praise the Devas, the praisworthy ! let us adore the adorable ! let us worship the worshipful !

हम स्तुति करने योग्य देवोंकी ही स्तुति करेंगे, नमन करने योग्य जो होंगे उनकोही नमन करेंगे तथा पूजा करने योग्य जो होंगे उनही की पूजा करेंगे ।

पंचम अध्याय ।

(ब्राह्मण ३)

(१३७) यतरो वै संयत्तयोः पराजयते अप वै संक्रामत्यभितरामु वै जयन्क्रामति तस्मा-दभितरामभितरामेव क्रामेत् ।

Whichever of the two combatants retreats, no doubt, is defeated, and he who advances obtains victory; therefore one should always advance and not retreat.

युद्ध करनेवालोंमें जो पीछे हटता है, पराजित होता है और जो आगे बढता है, विजय पाता है । इस लिये आगे बढना उचित है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम अध्याय ।

(ब्राह्मण ४)

(१३८) स्त्री ह वै तमर्धं कुरुते श्रियेऽन्नाद्याय यस्मिन्नर्धे भवति य एवं वेद ।

And verily, he who knows this, makes that locality wherein he lives, his own, for his own happiness and supply of food.

जो इस ज्ञान को जानता है वह जहां रहता है उस स्थानको अपने लिये शोभासे और अन्नसे युक्त बनाता है ।

15,78kh
17938

षष्ठ अध्याय ।

(ब्राह्मण १)

(१३९) द्विषन्द्विषतेऽरातीयति ।

Enemy seeks to injure enemy.

शत्रु शत्रुकी हानि करनेका अवसर देखता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१४०) प्रजा वै पशवो मध्यम् ।

Offspring and cattle, indeed, constitute the centre.

बालबच्चे और पशु ही संसार का मध्य है ।

ॐ ॐ ॐ

(१४१) नानुव्याहारीव स्यात् । उत ह्येवंवित्परो भवति ।

One should not utter imprecations: for whosoever thus understands this, has the advantage.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाप देना, कोपना अच्छा नहीं । जो यह जानता है उसका भला होता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१४२) सर्वं वै संवत्सरः । सर्वं वा अक्षय्यम् ।

Assuredly the year is all, and the all (universe) is imperishable.

निश्चयसे संवत्सर ही सबकुछ है और सब अविनाशी (जगत्) है ।

षष्ठ अध्याय ।

(ब्राह्मण २)

(१४३) यज्ञेन वै देवा इमां जितिं जिग्युः ।

Verily, by means of the sacrifice Devas made that conquest.

निश्चयसे स्वार्थ त्यागसे ही देवोंने इस विजयको प्राप्त किया ।

ॐ ॐ ॐ

(१४४) श्रमेण ह स्म वै तद्देवा जयन्ति यदेषां जय्यमास ।

By toil, the Devas indeed gained what they wished to gain.

परिश्रम करनेसे ही देवोंको विजय प्राप्त होता है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षष्ठ अध्याय ।

(ब्राह्मण ३)

(१४५) द्वयं वा इदं न तृतीयमस्ति । आर्द्रं चैव शुष्कं च । यच्छुष्कं तदाग्नेयं । यदार्द्रं तत्सौम्यम् ।

Two-fold, verily, is this, there is no third: to wit, the moist and the dry; and what is dry, that relates to Agni; and what is moist, that relates to Soma.

यहां केवल दो हैं तीसरा नहीं है । गीला और शुष्क । जो शुष्कत्व है वह अग्नि का है और जो गीलापन है वह सोमका है ।

ॐ ॐ ॐ

(१४६) अग्नीषोमयोर्हैवैतावती विभूतिः प्रजातिः ।

So manifold is the power, the generative force of Agni & Soma.

इस प्रकार अग्नि और सोमकी उत्पादक शक्ति विविध प्रकारकी है ।

ॐ ॐ ॐ

(१४७) सूर्य एवाग्नेयः । चन्द्रमाः सौम्यः । अहरेवाग्नेयं । रात्रिः सौम्या । य एवापूर्यतेऽर्द्धमासः स आग्नेयो योऽपक्षीयते स सौम्यः ।

The Sun, indeed, relates to Agni and the Moon to Soma; the day relates to Agni and the night to Soma; The waxing half-moon relates to Agni and the waning one to Soma.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य, दिन और शुक्लपक्ष आग्नेय हैं और चंद्र, रात्री, और कृष्णपक्ष सोमीय हैं।

षष्ठ अध्याय ।

(ब्राह्मण ४)

(१४८) तद्वा एतत् । अविक्षीणमेव देवानामन्नाद्यं परिप्लवते ।

Now it is only when that food of the Devas is unfailing that it comes back (to men).

जब देवोंका अन्न क्षीण नहीं होता तब ही वह (मनुष्योंके पास) आता है ।

सप्तम अध्याय ।

(ब्राह्मण १)

(१४९) मा वस्तेन ईशत माऽघशंसः । (य. १।१)

No thief, no ill wisher may lord it !

चोर अथवा पापी उसका स्वामी न बने ।

सप्तम अध्याय ।

(ब्राह्मण २)

(१५०) ऋणं ह वै जायते योऽस्ति । स जायमान एव देवेभ्य ऋषिभ्यः पितृभ्यो मनुष्येभ्यः ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Verily who-ever exists, he, in being born, is born as a debt to the Devas, to the sages, to the fathers and to men.

जो मनुष्य जन्मता है वह देव, ऋषि, पितर और मनुष्योंका ऋणी होता है।

सप्तम अध्याय।

(ब्राह्मण ३)

(१५१) यक्षत्स्वं महिमानमिति। यत्र वा अदो देवता आवाहयति तदपि स्वं महिमानमावाहयति।

May he sacrifice to his own greatness! when on that occasion, he asks him to bring hither the Deities, he also makes him bring hither his own greatness.

वह अपनी महत्ताके लिये यज्ञ करे। जब उस समय देवताओंका आवाहन होता है वह भी स्वकीय महत्त्वकाही आवाहन है।

ॐ ॐ ॐ

(१५२) नग्नताया वै बिभेमि।

I dread nakedness.

नग्नता का भय है।

सप्तम अध्याय।

(ब्राह्मण ४)

(१५३) प्रजापतिर्ह वै स्वां दुहितरमभिदध्यौ। दिवं वोष-सं वा मिथुन्यनया स्यामिति तां संबभूव ॥१॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद्वै देवानामाग आस । य इत्थं स्वां दुहितरमस्माकं स्वसारं करोति ।

Prajapati conceived a passion for his own daughter,—either the Sky or the Dawn. 'May I pair with her!' Thus thinking he united with her. This, assuredly, was a sin in the eyes of Devas. 'He who acts thus towards his daughter, our sister, commits a sin,' They thought.

प्रजापतिने अपनी दुहिता—द्यौ अथवा उषा—का बुरी दृष्टि से चिंतन किया । इस के साथ रहूंगा ऐसा विचार करके संग किया । देवों के मत से वह पाप हुआ । देव कहने लगे कि जो इस प्रकार अपनी दुहिता के साथ, अर्थात् हमारी बहिन के साथ, बर्ताव करेगा वह पाप करेगा ।

ॐ ॐ ॐ

(१५४) शान्तिरापस्तदद्भिः शमयति ।

Water is a means of purification, hence he purifies himself with water.

जल शांति (पवित्रता) करनेवाला है इसलिये शांतिकारक जलसे वह अपने आपको शुद्ध करता है ।

अष्टम अध्याय ।

(ब्राह्मण १)

(१५५) उपहूतेडा ततुरिरिति ।...ततुरिरिति सर्वं ह्येषा पाप्मानं तरति ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'Hither is called Idâ, the conquering'...because she overcomes evil.

विजयी इडा देवीको इदर बुलाते हैं क्यों कि इड-(शुद्ध वाणी)-सब दुष्टताका नाश करती है।

ॐ ॐ ॐ

(१५६) उपहूतः सखा भक्ष इति। प्राणो वै सखा भक्षः।

'Hither is called the friend, the food!' the friend the food, doubtless, means breath.

मित्र अर्थात् अन्नको यहां बुलाते हैं। प्राण ही मित्र अन्न है।

ॐ ॐ ॐ

(१५७) जीवेयं प्रजा मे स्याच्छ्रियं गच्छेयम्।

May I live long; may I have offsprings, may I obtain prosperity.

मुझे दीर्घ आयु, उत्तम संतान और संपत्ति प्राप्त होवे।

अष्टम अध्याय।

(ब्राह्मण २)

(१५८) देवानां वै देवाः सन्ति छन्दांस्येव पशवो ह्येषां गृहा हि पशवः प्रतिष्ठो हि गृहाः।

The metres are the Devas of Devas, since they are their cattle, and cattle means home, and home is a safe resting Place.

छंद देवोंके देव हैं, क्योंकि वे पशु हैं, पशु ही घर हैं और घर ही सुरक्षित स्थान है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्टम अध्याय ।

(ब्राह्मण ३)

(१५९) यत्साधु वदेयुः । यत्साधु कुर्युः ।

They should speak what is favourable, that they should do what is favourable (conducive to suceess).

विजय प्राप्त करनेवाला ही भाषण बोले, और कर्म करे। (साधु—विजय प्राप्त करनेवाला)

ॐ ॐ ॐ

(१६०) स्वस्तिर्मानुषेभ्यः ।

Success to the human.

मनुष्यमात्रका विजयी कल्याण होवे.

नवम अध्याय ।

(ब्राह्मण १)

(१६१) भद्रमभूत् ।

Successful this has turned out.

यह कल्याण ही हो गया ।

ॐ ॐ ॐ

(१६२) मा ह कस्माच्चन प्रत्रासीः ।

Mayest thou not be afraid of anybody.

किसीसे न डरो ।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१६३) स्वस्ति नो देवत्रास्तु स्वस्ति मनुष्यत्रेति।

May we enjoy bliss among the Devas, bliss among men.

देवों में हमको कल्याण प्राप्त होवे, तथा मनुष्यों में भी कल्याण हमको प्राप्त होवे.

नवम अध्याय।

(ब्राह्मण २)

(१६४) गातुविदो हि देवाः।

Devas are, indeed, the finders of path.

मार्ग जाननेवाले देव होते हैं।

ॐ ॐ ॐ

(१६५) गातुमितेति।

Walk in the Path.

मार्गपर चलो.

नवम अध्याय।

(ब्राह्मण ३)

(१६६) सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सं शिवेन। (य. २।२४;८।१४,१६)

We have united with lustre, with vigour, with the bodies, and with the happy spirit.

तेज, बल, शरीर और उत्तम मन के साथ हम हो गये हैं।

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२/६८८ग

(१६७) शतं वर्षाणि जीव्यासम् ।

May I live a hundred years.

मैं सौ वर्ष जीवित रहूंगा ।

ॐ ॐ ॐ

(१६८) भूयांसि शताद्वर्षेभ्यः पुरुषो जीवति ।

Man lives even longer than a hundred years.

मनुष्य सौ से अधिक वर्ष भी जीवित रहता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१६९) इदं मे अयं वीर्यं पुत्रोऽनुसन्तनवदिति ।

May this son carry on this manly deed of mine.

यह मेरा पौरुष कर्म मेरा पुत्र आगे चलावे ।

प्रथम कांड समाप्त ।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथर्ववेद प्रथम कांड।

मूल्य २) दो रु. डा० व्य० ।।) आठ आने; वी. पी. २।।।) दो रु. बारह आने।

इसमें निम्न लिखित विषय आये हैं–

मेधाजनन, वैयक्तिक विजय, पिताके गुण-धर्म-कर्म, माताके गुण—धर्म-कर्म, पुत्रके गुण-धर्म-कर्म, कुटुम्बका विजय, औषधि-प्रयोग, राष्ट्रका विजय, पर्जन्यसे आरोग्य, मित्र (प्राण) वायुसे आरोग्य, वरुण-चन्द्र-सूर्य इनसे आरोग्य, पञ्चपाद पिता, पृथ्वीमें जीवन, मूत्रदोषनिवारण, जलकी भिन्नता, जलमें औषध, समता और विषमता, बल की वृद्धि, दीर्घ आयुष्यका साधन, प्रजनन शक्ति, धर्मप्रचार, अग्नि कौन है, ज्ञानी उपदेशक, ब्रह्मक्षत्रिय, इन्द्र कौन है, धर्मोपदेश का क्षेत्र, दुष्टोंका सुधार, मित भोजन करो, दुष्टजीवन का पश्चात्ताप, धर्मका दूत, ब्राह्मण और क्षत्रियों के यत्नका प्रमाण, डाकुओंको दंड, नवप्रविष्टका आदर, दुष्टोंकी संतान का सुधार, वर्चःप्राप्ति, देवताओंका संबन्ध, उन्नतिका मूलमंत्र, विजयके लिये संयम, ज्ञानसे जातिमें श्रेष्ठता की प्राप्ति, उन्नतिकी चार सीढियां, पापसे छुटकारा पानेका मार्ग, एक शासक ईश्वर, ज्ञान और भक्ति, सुख-प्रसूति, देवोंका गर्भमें विकास, गर्भवती स्त्री, सुख प्रसूतिके लिये आदेश, धाई की सहायता, श्वासादि रोगनिवारण, सूर्य किरण से चिकित्सा, अन्तर्यामी ईश्वर का नमन, तप का महत्त्व, युद्धमें सहायता, कुलवधू, पहिला प्रस्ताव, प्रस्तावका अनुमोदन, वरकी परीक्षा, पतिके गुणधर्म, वधूपरीक्षा, कन्याके गुणधर्म, मंगनीका समय, सिरकी सजावट, मंगनीके पश्चात् विवाह, संगठन-महायज्ञ सूक्त, संगठन से शक्तिकी वृद्धि, यज्ञ में संगतिकरण, पशुभाव का यज्ञ, पशुभाव छोडनेका फल, चोरनाशन, सीसे की गोली, रक्तस्राव बंद करना, घाव और रक्तस्राव, विधवा के वस्त्र, सौभाग्यवर्धन, वाणीसे कुलक्षणोंको हटाना, हाथों और पावों का दर्द, सन्तान का कल्याण, शत्रु-नाशन, आन्तरिक कवच, ब्राह्म और क्षात्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवच, दास भाव का नाश, हृदयरोग तथा कामिला रोग की चिकित्सा, परिधारण विधि, रंगीन गौके दूधसे चिकित्सा, श्वेत कुष्ठ-नाशन सूक्त, वनस्पतिके माता पिता, सूर्यसे वीर्यप्राप्ति शीत-ज्वर-दूरीकरण, विजयी स्त्रीका पराक्रम, इन्द्राणी, निर्जरा अभीवर्त मणि, राजाके गुण, आदित्य देवोंकी जाग्रती, देवों पिता और पुत्र, देवोंके स्थान, देहमें चार दिग्पाल, मनुष्यमें चार द्वारोंकी चार आशाएं, विद्दति द्वारसे प्रवेश, अमर दिक्पाल हवनसे पूजन, जीवन रस का महासागर, जगत् के माता पिता, स्थूल-सूक्ष्म और कारण, मधुविद्या, दाक्षायण हिरण्य, सुवर्ण-धारण, राक्षस और पिशाच, सुवर्णका सेवन, मनुष्य के शरीरमें देवोंके अंश और काली कामधेनुका दूध।

वैदिक यज्ञ संस्था तृतीय भाग।

गोमेध।

इस पुस्तकमें निम्न लखित विषयोंका विचार हुआ है—

योगमें गोमांस, प्रकरणानुकूल अर्थ विचार, ऋषिपंचमी वेदका महासिद्धान्त, यज्ञकी पूर्व और उत्तरवेदी, मधुपर्क, कलि वर्ज्यप्रकरण, बृहदारण्यकका वचन, गौके वैदिक नाम, गोमेधका विचार, चरककी साक्षी, विवाहमें गोमांस, अतिथिके लिये गौ, यज्ञमें मांस, अन्त्य यज्ञ, वेदमें अहिंसा, अवध्य गौ और बैल यज्ञका तत्त्व, गौको खाना। गौ दान लेने का अधिकारी, रक्षक और पाचक, गौका महत्त्व, राष्ट्ररक्षक गौ, गौके लिये सोमरस, सबकी माता गौ।

इत्यादि अनेक विषय इसमें आगये हैं। हरएक विषयका प्रतिपादन करनेके लिये अनेक वेदमंत्रोंके प्रमाण दिये हैं। जो कहते कि "वैदिक समयमें गोमांस भक्षण की प्रथा थी," उनके लिये यह उत्तम उत्तर है। यह पुस्तक पढनेके पश्चात् इस विषयमें कोई शंका नहीं रहेगी। मूल्य १) रु. डा० व्य० ।)

स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्यायान्मा प्रमदः ॥ तै. उ. १।११

स्वाध्याय करनेमें सुस्ती न कीजिए।

"वेदका पढना पढाना, सुनना सुनाना सब आर्योंका परम धर्म है।"

"वैदिक धर्म।"

वैदिक धर्मके तत्त्वोंका प्रचार करनेवाला 'मासिक पत्र'। केवल वेदका विचार करनेवाला मासिक पत्र संपूर्ण भारत वर्षमें यह ही एक है। वार्षिक मूल्य डाकव्यय आदि समेत ४) चार रु० है।

शीघ्र मंगवाइए और अपने मित्रोंको ग्राहक बननेके लिये उत्साहित कीजिए।

मंत्री—स्वाध्याय-मंडल,
औंध (जि. सातारा.)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन का सुधार।

वेद के स्वाध्याय से ही मनुष्योंके जीवन का सुधार हो सकता है।

(१) यजुर्वेद अ० ३० की व्याख्या । **नरमेध ।** "मनुष्योंकी सच्ची उन्नति का सच्चा साधन।" मूल्य १) एक रुपया।

(२) यजुर्वेद अ० ३२ की व्याख्या । **सर्वमेध।** "एक ईश्वरकी उपासना।" मू. ॥) आठ आने।

(३) यजुर्वेद अ० ३६ की व्याख्या । **शांतिकरण।** "सच्ची शांतिका सच्चा उपाय।" मू. ॥=) दस आने।

(४) रुद्र देवताका परिचय। मू. ॥) आठ आने।

(५) ऋग्वेदमें रुद्र देवता। मू. ॥=) दस आने।

(६) मानवी आयुष्य। मू. ।) चार आने।

(७) ३३ देवताओंका विचार। मू. ≡) तीन आने।

(८) संध्योपासना। प्रतिदिन का योगाभ्यास। मूल्य १॥) डेढ रु.।

(९) संध्याका अनुष्ठान। मू. ॥) आठ आने।

(१०) वैदिक राज्य पद्धति। मू. ।-) पांच आने।

(११) वैदिक सभ्यता। मू. ॥।) बारह आने।

(१२) वैदिक चिकित्साशास्त्र। मू. ।=) छः आने।

(१३) शतपथ-बोधामृत। मू. ।) चार आने।

(१४) वेदका स्वयंशिक्षक। प्रथम भाग। मू. १॥) डेढ रु.

मंत्री—स्वाध्याय-मंडल, औंध (जि. सातारा.)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Ar[illegible] Chennai and eGangotri

15,73kh

17938

Entered [illegible]
17/1/2007

Signature with Date

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar